*Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi*
*Vol. 2, Issue 1 – 2018*

# अध्यापक और अधिगमकर्ता के अधिगम के लिए आकलन
# (ASSESSMENT FOR LEARNING FOR LEARNERAND TEACHER)

**अभिषेख कुमार पाण्डेय***

*"शिक्षा को सम्पूर्ण बनाने के लिए मानवीय होना चाहिए। इसमें केवल न तो बुद्धि का प्रशिक्षण बल्कि हृदय की स्वच्छता और आत्मा का अनुशासन भी सम्मिलित होना चाहिए"।*

डॉ.राधाकृष्णन

हमारा भारत एक विकासशील देश हैं जो 21वी शताब्दी के लिए एक ऐसी शिक्षा नीति तैयार करने के पेशकश मे है जो की रुढ़िवादी समाज को एक अतिआधुनिक, प्रगतिशील एवं संपन्न समाज में परिवर्तन करने में मुख्या भूमिका निभाता हैं। यदि विद्यार्थी को जीवन में सफलता, सम्मान और पहचान प्राप्त करना है तो उरा विद्यार्थी को शिक्षित होना पड़ेगा और यह तभी संभव हैं जब शिक्षा ग्रहण करेगा।

शिक्षा एक विद्यार्थी के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा के माध्यम से ही मानव का विकास और उन्नयन निर्भर करता हैं। विद्यार्थी के चरित्र का निर्माण और श्रृंगार भी इन्ही के माध्यम से होता हैं। शिक्षा समाज को एक पीढ़ी को दुसरे पीढ़ी में निरंतर ज्ञान के हस्तांतरण के माध्यम से विद्यालयी समाज से गृह समाज और राष्ट्र समाज का निकाश कर उनके समाजीकरण का निर्माण करती है। तथा यह प्रणाली समाज में सामाजिक संस्कृति को बनाये रखने में मदद कराती हैं। मानव जीवन में शिक्षा का अत्यधिक महत्व है। मनुष्य के शरीर, मन, एवं आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्तियों के सर्वांगीण विकास को शिक्षा कहते है। शिक्षा द्वारा हमारे कीर्ति का प्रकाश हमारे चारो ओर विस्तारित होता है तथा हमारे समस्याओं को सुलझाने में, जीवन को सुसंस्कृत बनाए रखने में अनौपचारिक रूप से शिक्षा अपना भूमिका निभाती रहती है, हम इस धरती पर कही भी रहे यह अपने ज्ञान के द्वारा सदैव मार्गदर्शन का काम कराती रहती है।

अर्थात जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश से एक कमल का फूल खिल कर अपनी सुन्दरता को बिखेरता है और अस्त होने पर अपने पुरवा की अवस्था में बिराजमान हो जाता है ठीक उसी प्रकार शिक्षा के द्वारा एक बालक कमल के फूल की भाति खिल उठता है ये अशिक्षा के अभाव में दरिद्रता शोक एवं कष्ट के अन्धकार में डूबा रहता है। अर्थात शिक्षा वह मार्ग है जिसके द्वारा एक बालक के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, संवेगात्मक, संज्ञानात्मक भाषायी विकास होता है इससे वह समाज का सभ्य, उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्रवान नागरिक बनकर राष्ट्र के उन्नति अपनी शक्ति का पूरा प्रयोग करता है।

शिक्षा किसी भी आधुनिक सभ्य उन्नत और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिवार्य लक्षण है और इसके बिना प्रगति कभी भी पूर्ण और बहुआयामी नहीं हो सकती।

*शोधकर्ता (शिक्षक-शिक्षा–शास्त्र) ,नेहरु ग्राम भारती डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी, इलाहाबाद, एवं सहायक आचार्य, किंगवे टेक्निकल इंस्टिटच्यूट, कुल्हारिया कैमूर, बिहार। ***Correspondence E-mail Id:*** editor@eurekajournals.com

*© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.* **ISSN: 2581-4044**

विद्यार्थी ही राष्ट्र और समाज की उन्नति का मूल है, यदि हमें राष्ट्र को उन्नति एवं प्रगतिशील बनाना है तो समाज में सभ्य एवं सुसंस्कृत कुशल नागरिक बनाना ही ही होगा और यह कार्य शिक्षा के द्वारा पूर्ण सम्भव होता है।

जन्म के समय एक विद्यार्थी मात्र असंतुलित गतिओं का एक समूह का निर्माण करता है जो दैनिक जविक जीवन से संघर्ष करते हुए परिवार के बड़े लोगो की सहायता से जीवन और मृत्यु के लिए बाध्य होता हैं यह अनिवार्यता एक बालक के विकसित समाजीकरण का प्रतिबिम्ब का कार्य करता हैं। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जविक जीवन के अस्तित्व की पहचान कराती है। जब एक शिशु जन्म लेता है तो मात्र वह एक असहाय प्राणी के अलवा कोई नहीं होता है जो अपने, माता–पिता और अन्य परिवार जन्य के सहयोग से जब उसको अपने अस्तित्व की पहचान नहीं थी, मानवीय जीवन का अर्थ स्पष्ट होता है।

एक बालक जब माँ के गर्भ से जन्म लेता है तो वह मात्र आश्रित रक्त, मांस, हड्डी, और अन्य अंगो का जीवित प्राणी होता है। उसके जीवन का वास्तविक पहचान नहीं होता है वह पशुवत की तरह आचरण दर्शाता हैं और उसकी जीतनी मूल प्रबित्तिया हैं उनको अपने व्यवहारों में समाहित कर कार्य करता हैं। शिक्षा अपने मार्गदर्शन में छात्र की मूलप्रबित्तियों में परिपक्वता प्रदान करता हैं। जिससे उस विद्यार्थी के व्यवहार, आचरण और क्रियाकलापों को उचित रूप से सामाजिक तथा सांस्कारिक बनाता हैं। और बालक के राचनात्मकशक्ति का भी बिश्वास भी बनाता हैं।

जन्म के समय बालक का ना तो किसी तरह का सामाजिक विकास होता है ना तो किसी तरह का बिरोधात्त्मक सामाजिक गुणों का विकास है। हमारे सामाजिक संस्कृति रूपी परिवार में उसका पालन पोषण होता हैं, और उस संस्कृति में पलते हुए उसका समाजीकरण का विकास होने लगता है। वास्तव में समाजीकरण की प्रक्रिया जन्म के कुछ समय पश्चात ही हो जाता है, जैसे एक शीशु को जब भूख लगता है तो वह रोता है और अपने हाथ पैर पटकना सुरुवात कर देता हैं उसी तरह से बालक में समय के अनुसार उसके सामाजिक विकास अर्थात एक अछे नागरिक के रूप में अस्तित्वा को प्राप्त करने हेतु उसको विद्यालय में भेजा जाता है जहाँ पर एक अछे मार्गदर्शक के रूप में अध्यापक के समक्ष बालक को भेजा जाता है जहाँ पर उसका शैक्षिक विकास किया जाता है। जब की एक बालक का प्राथमिक विद्यालय तो उसका परिवार होता है जहाँ पर उसके माँ और पिता उसके अध्यापक की भूमिका निभाते है फिर भी उसके सर्वांगीण सामाजिक विकास के लिए विद्यालय में प्रवेश कराया जाता है जहाँ पर उसके समाज से जुड़े सभी जानकारी दी जाती है। किशोरावस्था से तात्पर्य ऐसी अवस्था जो की १२ वर्ष से १८/१९ वर्ष तक मणि जाती है जिस काल समय में बाल्यावस्था का प्रांत होता है और प्रौढ़ अवस्था का सुभारम्भ होता हैं इसी कारण से इस अवस्था को संधिकाल कहा जाता है। जब हम किशोर बालको की चर्चा करते है तो ये पाते है की इस काल में बालक के विकास की सबसे ज्यादा जरुरत होती है।

यहाँ सामान्य बालको से तात्पर्य ऐसे बालको से है जो वंशानुक्रम से प्राप्त रशिओं शक्तिओं के आधार पर भी लगभग सामान्य होते हैं और जिन्हें अपने विकास के लिए पर्यावरण भी सामान्य मिलता हैं। इस अवस्था में किशोर के बुद्धि का पूर्ण विकास हो जाता हैं उनमे धयन केन्द्रित करने की क्षमता का भी विकास होने लगता है अपने पराये का भी समझ होने लगता हैं स्मरण तीब्र करने की शक्ति प्रबल होने लगती हैं। स्थाईत्व का भी

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

विकास होने लगता हैं, कल्पना का भी विकास हने लगता हैं बालक का आध्यामिक क्विद्यालय में प्रवेश हो जाता हैं। किशोरों में तर्क करने का चिंतन करने का विश्लेषण करने और अमूत चिंतन की शक्ति बढ़ जाती हैं। समस्या समाधान करना उनके बाये हाथ का खेल हो जाता हैं। इस आयु में बालको में मूर्त संप्रत्यय के साथ साथ अमूर्त संप्रत्यय का भी निर्माण हो जाता हैं। यही कारन है की किशोर काल के प्रारंभ अवस्था को प्रारंभिक किशोरावस्था और अंत को पाश्चात्य किशोरावस्था कहते हैं। साथ ही साथ उन बालक में शारीरिक और मानशिक परिपक्वता आती है और उनका सामाजिक क्षेत्र भी बढ़ने लगता है मित्रो की मंडली बना लगाने लगते है लड़के लड़कियो की तरफ आकर्षित होने लगते हैं और लड़कियां लडको की तरफ आकर्षित होने लगते हैं। जिसका यह निष्कर्ष निकालता है की उनका शब्द भंडार बढ़ने लगता हैं भिन्न भिन्न शब्दों में अंतर करना आ जाता हैं यहाँ तक की समानार्थी और पर्यायवाची शब्दों में भेद करने लगते हैं।

किशोर काल में मौखिक अभिव्यक्ति भी स्पस्ट हो जाती हैं वे अपने शब्दों को तर्कपूर्ण ढंग से समझाने में सम्र्थ हो जाते हैं लेखन शैली के साथ साथ वर्णात्मक शैली भी स्पष्ट होने लगती है। यही नहीं किशोरों में संवेगात्मक रूप से प्रेम, भाव, चिंता, कष्ट, क्रोध, इर्ष्या एवं आक्रोश अपने तीव्रता के चरम सीमा पर जा चूका होता है इसी कारण इस काल को संघर्ष काल भी कहते हैं। उनमे आत्मसम्मान की भावना के साथ अपने समूह के प्रति अपने स्थिति के प्रति भी सचेत होते हैं।

*"समाज के अन्दर समाजीकरण के विभिन्न साधनों में परिवार सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।"*

किम्बाल यंग

यदि विद्यार्थी को जीवन में सफलता, सम्मान और पहचान प्राप्त करना है तो उस विद्यार्थी को शिक्षित होना पड़ेगा और यह तभी संभव हैं जब शिक्षा ग्रहण करेगा। शिक्षा एक विद्यार्थी के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा के माध्यम से ही मानव का विकास और उन्नयन निभंर करता हैं। विद्यार्थी के चरित्र का निर्माण और श्रृंगार भी इन्ही के माध्यम से होता हैं। जब एक शिशु जन्म लेता है तो उसके जीवन का वास्तविक पहचान नहीं होता है वह पशुवत की तरह आचरण दर्शाता हैं और उसकी जीतनी मूल प्रबित्तिया हैं उनको अपने व्यवहारों में समाहित कर कार्य करता हैं। शिक्षा अपने मार्गदर्शन में छात्र की मूलप्रबित्तियों में परिपक्वता प्रदान करता हैं। जिससे उस विद्यार्थी के व्यवहार, आचरण और क्रियाकलापो को उचित रूप से सामाजिक तथा सांस्कारिक बनाता हैं। और बालक के रचनात्मकशक्ति का भी बिश्वास भी बनाता हैं।

मानव जीवन में शिक्षा का अत्यधिक महत्व है। मनुष्य के शरीर, मन, एव आत्मा मे निहित सर्वोत्तम शक्तियो के सर्वांगीण विकास को शिक्षा कहते है। शिक्षा किसी भी आधुनिक सभ्य उन्नत और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिर्वाय लक्षण है और इसके बिना प्रगति कभी भी पूर्ण और बहुआयामी नहीं हो सकती। विद्यार्थी ही राष्ट्र और समाज की उन्नति का मूल है, यदि हमें राष्ट्र को उन्नति एवं प्रगतिशील बनाना है तो समाज में सभ्य एवं सुसंस्कृत कुशल नागरिक बनाना ही ही होगा और यह कार्य शिक्षा के द्वारा पूर्ण सम्भव होता है। वर्तमान शिक्षा की सार्थकता वही तक है जिस सिमा तक मानवीय आवश्यकताओ अपेक्षाओं की पूर्ति कर सके। आज की चकाचौंध डिजिटल प्रणाली, भौतिक व पूंजीवादी सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था में विद्यार्थी की अपेक्षाओं व आकांक्षाओ का स्तर कॉफी ऊँचा होता है और उसकी पूर्ति न हों पर विद्यार्थी कुंठा व नीरशा का शिकार हो जाता है। शिक्षा

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

विद्यार्थी के व्यवहार को परिवर्तित व परिमार्जित करती है। शिक्षा के द्वारा ही विद्यार्थी को सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाकर उसे समाज एवं राष्ट्र का एक उपयोगी नागरिक बनाया जा सकता है। शिक्षा किसी भी देश के विकास का मूल आधार होता है, इसके द्वारा न केवल कुशल मानव संशाधन का निर्माण होता है, बल्कि देश के विकास के लिए योग्य नागरिक का निर्माण भी होता है। किसी भी देश में बालक शैक्षिक विकास उसके जन्म जात गुणों एवं पर्यावरणीय दशाओ दोनों से परभावित होती है।

विद्यार्थिओं के शैक्षिक स्तर को सार्वभौमिक करने के लिए शैक्षिक उपलब्धि को सुनिश्चित किया जाय जँहा पर शैक्षिक प्रतिफल को शैक्षिक उप्लब्धि के समानार्थी मन जाता है जो की एक निश्चित कालावधि में अध्ययन व मूल्यांकन से प्राप्त आंकेत मान है परंतु एक बड़े समुदाय मे जब इस आंकिक मान का निरीक्षण किया जाया तो उसमे विभिन्नता दिखाई देती है, तब एक चिंतन योग्य प्रश्न आता है की इस आंकिक मान में ये अंतर क्यों हैं।

मापन की अवधारणा मूल्याकन की अवधारणा से थोड़ी भिन्नता रखती हैं। मापन का सीधा संबंध किसी गुण विशेषता, योग्यता, या अर्जित व्यवहार की मात्रा प्रदर्शित करने से है विद्यार्थी में अमुक गुण कितना है उसकी योग्यता कितनी है तथा उसने शैक्षिक परिस्थितियों के माध्यम से किस मात्रा मे नव कोटि का व्यवहार अर्जित किया है आदि मुद्दा शैक्षिक मापन से जुड़ा होता है।

मापन से तात्पर्य है किसी निश्चित इकाइयों में वस्तु, गुण या विशेषता के पाए जाने की मात्रा का पता लगाना। यह भौतिक वस्तु एवं मानवीय व्यवहार के विविध पक्षो या गुणो के संबद्ध मे एक ही जैसा महत्व रखते हुए भी थोड़ी भिन्नता जरूर रखता हैं।

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक मापन भौतिक मापन की तुलना मे अधिक जटिल है।

रिचर्ड एच० लाइंक्मान के अनुसार. *"मूल्याकन एक विवरणात्मक प्रक्रिया (Discriptive Process) है जिसके तहत किसी वस्तु या गुण के सत्ता मे होने का वर्णन रूप से सम्पन होता हैं।"*

ई० एल० थार्नडाईक के अनुसार *"प्रत्येक वस्तु जो भी सत्ता रखती है, किसी ना किसी परिणाम मे सत्ता रखती है और कोई भी वस्तु जिसकी किसी परिणाम मे सत्ता है, मापन योग्य है।"*

ब्रेडफील्ड तथा मोरडोक के शब्दो मे. *"मापन किसी घटना के विभिन्न आयामो के प्रतीक आवंटित करने की प्रक्रिया है जिससे उस घटना की स्थिति का यथार्थ निर्धारन किया जा सके।"*

उपरोक्त परिभाषाओ के आधार पर हम कह सकते है कि विद्यार्थी ने किसी गुण या विशेषता को कितनी मात्रा मे अर्जित किया हैं इसका विवरण परिमाणात्मक रूप से शैक्षिक माप्न के अंतर्गत उपलब्ध कराया जाता है। यह विवरण अंको, ग्रेड, पोर्टफोलियो विवरण या अन्य कई रूपो मे दिया जा सकता है।

माप्न दो तरह का होता है परिणात्मक एवं गुणात्मक। भौतिक मापन परिणात्मक होता है जबकि मापन प्रायः गुणात्मक होता है। परिणात्मक का अर्थ ऐसी कोई वस्तु जिसकी भौतिक जगत मे सत्ता हो, जिसमे आकार, विषय–वस्तु, परिमाण आदि गुण हो जिसे देखा जा सके और जिसकी उपस्थिती या अनुपस्थिति के एहसास किया जा सके। जैसे–दूरी, लम्बाई, क्षेत्रफल, भार, आयतन आदि के मापन। गुणात्मक मापन आत्मनिष्ठ एवं अनिश्चित होता है। जैसे किसी शिक्षक द्वारा विद्यार्थी के गुणो या उसकी का मापन जो उसके मन मे विद्यमान किसी प्रतिमान या मानदंड पर निर्भर होता है। इस आधार पर

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

यह विद्यार्थी को उत्तम माध्यम या निम्न कोटी मे रख सकता है।

## शिक्षा में आकलन क्या है?

1976 में ए. एफ. वार्म्स ने पहली बार वह पुस्तक प्रकाशित की थी जिसका कौतूहल जगाने वाला शीर्षक था 'विज्ञान कहलाने वाली यह चीज क्या है?' उस पुस्तक में उसने विज्ञान की प्रकृति के बारे में आधुनिक दृष्टिकोणों से पाठकों का परिचय कराने का प्रयास किया था। जैसे–जैसे उसमें वार्म्स ने वैज्ञानिक चिन्तन के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि प्रयोग करना, किसी धारणा को मिथ्या सिद्ध करने की सम्भावना (फाल्सिफेकशन), कूह्न का प्रतिमान (पैराडाइम) तथा बेइसियन पद्धति, आदि को समझाया, तो जल्दी ही यह स्पष्ट हो गया कि "वैज्ञानिक" ज्ञान की जाँच–पड़ताल की प्रकृति की यदि कोई विशेष खूबी है तो वह उसका अत्यन्त जटिल होना है। हम अपने को भी तब काफी कुछ वैसी ही स्थिति में पाते हैं जब हम "आकलन"–जो अत्यन्त जटिल है और जिसे अक्सर एक अनोखी धारणा की तरह सीमित कर दिया जाता है–कहलाने वाली इस चीज की पर्तें खोलना शुरु करते हैं।

शिक्षा में आकलन क्या है? इसे साक्ष्यों के सावधानीपूर्वक किए गए परीक्षण के द्वारा किसी व्यक्ति या किसी शैक्षणिक कार्यक्रम के बारे में निर्णय लेने की एक प्रक्रिया के रूप में सीधे–सीधे परिभाषित किया जा सकता है। आकलनों का महत्त्व मूल्यांकन करने के औजारों की तरह है क्योंकि ये शैक्षणिक प्रक्रियाओं तथा उनके परिणामों के बारे में बुनियादी सवालों–हम कक्षाओं में क्या पढ़ा रहे हैं, विद्यार्थी सीखने की सामग्री के साथ किस तरह काम कर रहे हैं, स्कूल के परिवेश में कैसा ज्ञान दिया जा रहा है, सीखी गई बातों को विद्यार्थी किस तरह आत्मसात और उपयोग कर रहे हैं, संसार के जानकार तथा फिक्रमन्द नागरिकों के रूप में विद्यार्थी कैसे विकसित हो रहे हैं?–के उत्तर देने में मदद करते हैं। आकलन रचनात्मक मूल्यांकन, अर्थात रोजमर्रा के अध्यापन का सतत चलने वाला ऐसा हिस्सा जिसके माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों के साथ की जाने वाली अपनी गतिविधियों में संशोधन करते हैं, हो सकते हैं। वे योगात्मक मूल्यांकन हो सकते हैं जो वर्ष के अन्त में शिक्षक को यह जानने और मूल्यांकन करने में सहायक होते हैं कि विद्यार्थी ने क्या सीखा है। इस दृष्टि से प्रामाणिक भी हो सकते हैं कि वे इसका मूल्यांकन करने का प्रयास करते हैं कि सीखी गई बातों को विद्यार्थियों द्वारा लम्बी अवधि में किस तरह लागू किया जाता है। उस दृष्टिकोण से देखने पर आकलन शैक्षणिक प्रक्रियाओं का समग्र रूप से मूल्यांकन करने की सतत प्रक्रिया का अंग होते हैं।

आकलन के रचनात्मक, योगात्मक तथा प्रामाणिक पहलू इसकी समग्रतावादी प्रकृति तथा शिक्षा के भीतर मूल्यांकन के अवसरों की जटिलता, दोनों की ओर संकेत करते हैं। शिक्षा की विशाल औपचारिक व्यवस्थाओं और जिन संस्थानिक तथा संगठनात्मक परिवेशों के भीतर स्कूली शिक्षा घटित होती है, उनके विकास ने आकलनों को विद्यार्थियों के सीखने की एक कहीं अधिक सँकरी तथा उपकरणात्मक धारणा बना देने का काम किया है। जैसे–जैसे संसार के विभिन्न देशों ने सार्वजनिक स्कूल व्यवस्थाओं पर अधिक राशि खर्च करना प्रारम्भ किया, वैसे–वैसे उस व्यय को लेकर जवाबदेही की आवाजें भी उठाई जाने लगीं। जवाबदेही की यह आवाज 'नए सार्वजनिक प्रबन्धन' (फर्ली ऐशबर्नर, फिटजेराल्ड एण्ड पीटीग्रिउ, 1996) की धारणाओं, जो विद्यार्थियों के प्रदर्शन के लिए स्कूलों के उत्तरदायी होने की माँग करती थीं, के अन्तर्गत विशेष रूप से अधिक जोर से उठाई गई। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा के लिए गठित बोर्डों ने मानकीकरण–मानक

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

पाठ्यक्रम, मानकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम, मानक पाठ्यपुस्तकें और यहाँ तक कि सीखने–सिखाने की मानक सामग्री भी– के माध्यम से स्कूली शिक्षा की प्रक्रिया को नियंत्रित करने का प्रयास किया (रोवन, 1990)। नियंत्रण की इस रणनीति की केन्द्रीय धारणा यह थी कि शिक्षा में निवेशित किए जाने वाले सभी साधनों (इनपुट्स) के मानकीकरण के माध्यम से मानकीकृत उत्पाद (आउटपुट्स) या परिणाम निकलकर सामने आएँगे–जो इस मामले में स्कूलों में विद्यार्थियों के प्रदर्शन और उनके सीखने के प्रमाण के रूप में होंगे।

इन निवेशित साधनों के मानकीकरण ने नीति निर्धारकों, शिक्षा बोर्डों तथा पाठ्यक्रमों का विकास करने वालों को स्कूली प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों पर मानकीकृत परीक्षाएँ– अलग–अलग विशिष्ट विषयों के लिए, विशिष्ट कक्षाओं या स्तरों के लिए–विकसित करने में भी सहायता की और इस तरह व्यक्तिगत तथा सामूहिक, दोनों स्तरों पर सिखाने और सीखने का मूल्यांकन कर सकना सम्भव बना दिया। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि पाँचवीं कक्षा का कोई विद्यार्थी अपनी कक्षा के अन्य विद्यार्थियों के साथ, तथा सारे राज्य तथा सारे देश में पाँचवीं कक्षा के सभी विद्यार्थियों के साथ, गणित की मानकीकृत परीक्षा में बैठे। ऐसी परीक्षा से उस विषय में उसके व्यक्तिगत प्रदर्शन का मूल्यांकन न केवल कक्षा पाँच की गणित के लिए पाठ्यचर्या में तय किए गए दिशा–निर्देशों के सापेक्ष हो सकता है बल्कि, उसके प्रदर्शन का मूल्यांकन कक्षा के उसके अन्य साथियों के सापेक्ष, कक्षा पाँच की उसी परीक्षा में बैठने वाले देश भर के विद्यार्थियों के सापेक्ष और अन्तर्राष्ट्रीय रूप से अन्य देशों मे उसी कक्षा के विद्यार्थियो के सापेक्ष भी हो सकता था। इसके परिणामस्वरूप, खराब प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों, खराब प्रदर्शन करने वाली कक्षाओं, खराब प्रदर्शन करने वाले स्कूलों तथा खराब प्रदर्शन करने वाले देशों, सभी का एक साथ मूल्यांकन किया जा सकता था। इसलिए खराब प्रदर्शन करने वाली कक्षाओं के लिए शिक्षकों को जवाबदेह ठहराया जा सकता था। प्राचार्यो तथा स्कूल बोर्डों को खराब प्रदर्शन करने वाले स्कूलों के लिए जवाबदेह ठहराया जा सकता था। जिला बोर्डों/शिक्षा विभागों को खराब प्रदर्शन करने वाले जिलों तथा राज्यों के लिए जवाबदेह ठहराया जा सकता था और अन्ततः राष्ट्रीय शैक्षणिक निकायों को खराब प्रदर्शन करने वाले राष्ट्रों के लिए जवाबदेह ठहराया जा सकता था। इस तरह, मानकीकरण तथा नियंत्रण करने की रणनीतियों को अपील स्पष्ट और तर्कसंगत थी। माना गया कि जवाबदेही के ऐसे दबावों के चलते गुणवत्तापूर्ण शिक्षा निकलकर सामने आएगी।

ऐसे उपायों का प्रभाव, निश्चित रूप से, ऐसी अपेक्षाओं के बिलकुल विपरीत पड़ा है और वह आज हमें एकदम स्पष्ट दिखाई देता है। मानकीकरण के अभियान के परिणामस्वरूप कक्षा में शिक्षक की स्वायत्तता का अभाव हो गया है और उसने शिक्षा व्यवस्था में सीखने वाले के निजी व्यक्तित्व को अदृश्य बना दिया है। साथ ही, इसकी परिणति विद्यार्थियों की सीखने की अपनी स्वाभाविक गति का अनुसरण करने की असमर्थता में तथा सन्दर्भों से कटे हुए ऐसे पाठ्यक्रम के प्रचलन में हुई है जिसका विद्यार्थियों के लिए हुए अनुभवों की पृष्ठभूमि में कोई अर्थ नहीं होता। इसका परिणाम यह भी हुआ है कि करीब–करीब एकतरफा जोर पाठ्यक्रम को पूरा करने और परीक्षाओं, जो अक्सर विशुद्ध रूप से योगात्मक आकलन होती हैं, के उद्देश्य से पढ़ाने पर हो गया है, जिसके फलस्वरूप विद्यार्थी रटकर सीखते है और निरन्तर परीक्षाओं के तनाव में रहते हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि विद्यार्थी स्कूलों में और स्कूलो से खुद को उत्तरोत्तर

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

अलग–थलग महसूस करते जा रहे हैं। इसके अलावा, निजी संस्थाओं, जिनका ध्यान परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए विद्यार्थियों को "सिखा–पढ़ाकर तैयार करने (ट्यूटरिंग)" पर केन्द्रित रहता है, ने स्कूल के बाहर के बच्चे के मुक्त स्थान और समय को भी धीरे–धीरे समाप्त कर दिया है, जिससे वह लगभग एक ऐसा जीव बनकर रह गया है जो छोटी और बड़ी परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन करने की तलाश में एक संस्था से दूसरी संस्था तक मारा–मारा फिरता है। शिक्षा की सार्वजनिक व्यवस्था में जवाबदेही लाने के इसके बहु–प्रचारित प्रयासों के बावजूद, नियंत्रण की इस रणनीति के फलस्वरूप, उत्साह तथा अच्छे प्रशिक्षण के अभाव से ग्रस्त शिक्षकों, जीवन–सन्दर्भों से कटे पाठ्यक्रमों और गहरी उदासीनता और बोझ से दबे विद्यार्थियो वाली एक काम न करने वाली व्यवस्था से अधिक कुछ भी हासिल नहीं हुआ है। तो आकलनों की धारणा में अब हम कैसे आगे बढ़ें? शायद यहाँ आकर यह नितान्त आवश्यक हो जाता है कि आकलन की अवधारणा को नए सिरे से गढ़ा जाए–शिक्षा के बारे में बुनियादी सवालों का मूल्यांकन करने की पद्धति के रूप में और उन शैक्षणिक प्रक्रियाओं का मूल्याकन करने के साधन के रूप मे जो विद्यार्थियों को अर्थपूर्ण सीखने में भाग लेने में समर्थ बनाती हैं या उसमें बाधा डालती हैं। इसे थोड़ा और समझाने का मुझे अवसर दें। किसी भी शैक्षणिक व्यवस्था के सबसे आधारभूत परिणाम–विद्यार्थियों के लिए अर्थपूर्ण सीखने में संलग्न होने का अवसर–की अनवरत जाँच–पड़ताल ही आकलनों का केन्द्रीय मुद्दा होना चाहिए। आकलनों को उन सभी प्रक्रियाओं की संरचना तथा कार्यप्रणाली का मूल्यांकन करना चाहिए जो विद्यार्थियों को इस तरह से सीखने में सक्षम बनाती हैं या जो इसमें उन्हें बाधा पहुँचाती हैं। उदाहरण के लिए, स्कूल पहुँच सकने के किसी विद्यार्थी के सामर्थ्य का भी आकलन किए जाने की आवश्यकता होती है। लेकिन यहाँ पहुँच का आशय बस्ती के आसपास स्कूल का उपलब्ध होना भर नहीं है, उसे समझने के लिए आगे बढ़कर कुछ अन्य बातों की पड़ताल भी जरूरी है। पहुँच की पड़ताल में बच्चे के घरेलू जीवन का मूल्यांकन और स्कूल जाने के लिए उसको मिलने वाले अवसर तथा प्रोत्साहन, स्कूल पहुँचने के लिए यातायात के साधन की उपलब्धता, बच्चे/उसके माता–पिता की स्कूल पहुँचने के सार्वजनिक यातायात का खर्च उठाने की क्षमता, बच्चों को स्कूल भेजने की परिवार की आर्थिक क्षमता–इन सभी का मूल्यांकन करना जरूरी है।

एक बारगी जब स्कूल तक पहुँच का मूल्यांकन कर लिया जाता है, तब स्कूली शिक्षा की समुचित उपलब्धता का आकलन करने की आवश्यकता होती है। इसके आकलनों में–स्कूल के माहौल, स्कूल के भौतिक परिवेश, स्कूलों में सार्थक ढंग से सीखने के लिए निर्मित सामाजिक–भावनात्मक वातावरण, विद्यार्थियों के लिए सुगम भाषा में जीवन–सन्दर्भों की दृष्टि से प्रासंगिक और अर्थपूर्ण पाठ्यक्रम की उपलब्धता, शिक्षकों के उत्साह तथा प्रतिबद्धता के स्तरों और विद्यार्थियों के साथ अलग–अलग काम कर सकने की शिक्षकों की स्वायत्तता, अपनी स्वाभाविक गति से सीखने में भागीदार होने की विद्यार्थियों की योग्यता, समुदाय तथा माता–पिता की भागीदारी का स्तर और विद्यार्थियों को अपने सीखे हुए ज्ञान का स्कूल के बाहर उपयोग करने के अवसर उपलब्ध होना–इन सभी पहलुओं को शामिल होना चाहिए। इन कारकों का अर्थपूर्ण आकलन उन प्रक्रियाओं को जो स्कूलों में सीखने के स्वस्थ वातावरण को मजबूत बनाती हैं, और उन प्रक्रियाओं को भी जो प्रभावी ढंग से सीखने के मार्ग में बाधाओं की तरह काम करती हैं, पहचानने में मदद करता है, और इसके परिणामस्वरूप

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

विद्यार्थियों का प्रामाणिक आकलन सम्भव हो पाता है, आकलन की अवधारणा में ऐसे परिवर्तन कैसे लाए जा सकते हैं? सबसे पहले, ऐसे नीतिगत उपाय किए जाना बेहद जरूरी हैं जो परीक्षाओं में सुधार लाएँ। यदि आकलन तथा शिक्षण को परीक्षाओं के लिए पढ़ाने से आगे बढ़ना है और विद्यार्थियों के सीखने का सतत मूल्यांकन किया जाना है, तो ऐसे नीतिगत उपाय आवश्यक हैं। हम इस बारे में अन्य देशों से सबक ले सकते हैं, जैसे कि नोर्डिक देशों से, जिन्होंने बरसों से कक्षा दर कक्षा विद्यार्थियों की परीक्षाएँ लेने पर रोक लगा रखी है। इसके बजाय, उन्होंने शिक्षक के पेशेवर विकास और कक्षाओं में बच्चों पर केन्द्रित शिक्षण पर तथा इन पद्धतियों के मूल्यांकन पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। कक्षा–आधारित परीक्षण पर संयम रखे जाने के बावजूद, फिनलैण्ड के बच्चे पीसा (पी.आई.एस.ए.) जैसी अन्तर्राष्ट्रीय परीक्षाओं मे असाधारण रूप से अच्छा प्रदर्शन करते हैं। स्कूलों में सिखाने तथा सीखने की केन्द्रीय प्रक्रियाओं को मजबूत बनाने में सहायता देने के लिए, हमारे देश में ऐसे नीतिगत उपाय सक्रिय रूप से प्रारम्भ किए जाने की आवश्यकता है जो शिक्षकों के निरन्तर चलने वाले पेशेवर विकास पर जोर देते हों। दूसरे, ऐसी संस्थाओं को सबल बनाया जाना चाहिए जो हमारे देश में स्कूलों को अकादमिक सहायता प्रदान करती हैं और इन संस्थाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण कारकों का आकलन करने में स्कूलों की सहायता करना चाहिए। तीसरे, हमें शिक्षा की अवधारणा में एक सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता है–जो रटकर सीखने तथा परीक्षाओं में प्रदर्शन से आगे बढ़कर शिक्षा को मनुष्यों की केन्द्रीय क्षमताओं को निर्मित करने की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करे। चौथे, हमें स्कूलों का समग्र रूप से मूल्यांकन करने के लिए उचित उपकरणों की आवश्यकता है, और ऐसे उपकरणों का विकास, परीक्षण तथा मूल्यांकन करने और देश भर में उनका क्रियान्वयन करने के लिए समुचित प्रयास किए जाने की जरूरत है।

शिक्षा की गुणवत्ता का आकलन करने के लिए मूल्यांकन की विधियाँ आवश्यक होती हैं। परन्तु, सीखने के परिणामों का छोटी और बड़ी परीक्षाओं के माध्यम से आकलन करने की प्रक्रिया के रूप में आकलन पर एकतरफा ध्यान केन्द्रित करने के फलस्वरूप नीति निर्माताओं ने शिक्षा के समग्र उद्देश्य तथा अभिप्राय की तथा उनकी प्राप्ति को सम्भव बनाने वाली प्रक्रियाओं की उपेक्षा की है। आकलन कहलाने वाली यह चीज क्या है इसका उत्तर तभी दिया जा सकता है जब हम पहले तीन बुनियादी प्रश्न पूछेंरू आकलन किसलिए है, वह किसके लिए है तथा वह किस चीज को मापता है? यदि हम इन प्रश्नों के उत्तरों को स्पष्ट और सुसंगत रूप से शिक्षा के लक्ष्यों तथा प्रयोजनों से जोड़ने में समर्थ होते हैं, तो आकलन अर्थपूर्ण होता है। अन्यथा, वह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के आकलन के बजाय, केवल परीक्षाओं में बच्चों के प्रदर्शन का निरीक्षणात्मक नियंत्रण करने का ऐवजी उपाय भर बनकर रह जाता है। आंकलन से आप क्या समझते है ?

आंकलन लोगों से सूचना एकत्रित करने की प्रक्रिया है। एक प्रकार से आंकलन मूल्यांकन का छोटा रूप है जो प्रक्रिया के पूर्व मे पूर्वाभ्यास के रूप मे अभिव्यक्त होता है। यह पूछताछ की प्रक्रिया मे पहला पद है।

डरवीन के अनुसार:

*"आंकलन छात्रों के व्यवस्थित विकास के आधार का अनुमान है। यह किसी भी वस्तु को परिभाषित कर चयन रचना, संग्रहण, विश्लेषण, व्याख्या और सूचनाओं का उपयुक्त प्रयोग कर छात्र विकास तथा अधिगम को बढ़ाने की प्रक्रिया है।"*

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

हुबा एव फ्रिड के अनुसार:

*"आंकलन सूचना संग्रहण की प्रक्रिया है जिन्हें हम विभिन्न माध्यमों से प्राप्त कर ये जानते है कि विद्यार्थी क्या जानता है, रागझता है तथा अपने शैक्षिक अनुभवों द्वारा प्राप्त ज्ञान को परिणाम के रूप मे व्यक्त कर सकता है जिसके द्वारा छात्र अधिगम मे वृद्धि होती है।"*

उपरोक्त परिभाषाओ के आधार पर यह कह सकते है कि आंकलन एक प्रकार का सावधानीपूर्वक सुविचारित राय है। आंकलन उन सभी क्रियाकलापों से संबन्धित है जो छात्र एवं शिक्षक दूसरे के आँकने में मिलता है। यह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रूपातरित एव प्रभावी बनाने मे हमारी सहायता करता है।

अत: हम कह सकते है कि

1. आंकलन लोगो से सूचना एकत्र करने कि प्रक्रिया है।
2. इसके द्वारा पृष्ठपोषण भी दिया जा सकता है।
3. यह पूछताछ प्रक्रिया का पहला पद है।
4. इसके द्वारा छात्र अधिगम मे सुधार तथा विकास किया जा सकता है।
5. आंकलन विचार विमर्श की प्रक्रिया है।

## आंकलन के उद्देश्य

आकलन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है

1. बच्चो के संदर्भ मे।
2. बच्चे क्या जानते है ?
3. बच्चो कि विशिष्ट आवश्यकताए क्या है?
4. उनका उचित स्थान निर्धारण करने मे।
5. बच्चो कि आवश्यकताओ के अनुरूप पाठ्यक्रम का चयन करने मे।
6. परिवार के संदर्भ मे माता पिता को बच्चे की प्रगति एवं अधिगम के बारे मे जानकारी प्रदान करने के लिए।
7. परिवार के संदर्भ मे घर की गतिविधियों एवं अनुभवों से संबधित स्कूल की गतिविधियाँ।
8. बच्चो के कार्यक्रम निर्धारण के संदर्भ मे बच्चो के लिए कौन से कार्यक्रम उपर्युक्त हैं कौन से नही है इस प्रोग्राम हेतु रणनीति बनाने के लिए।
9. बच्चो के कार्यक्रम निर्धारण के संदर्भ मे निर्धारित कार्यक्रम बच्चो के लिए किस सीमा तक लागकारी है यह ज्ञात करने लिए।
10. बच्चो के अध्यापन हेतु बच्चो के कौशल, योग्यता एवं आवश्यकताओ की पहचान करने में।
11. बच्चो के अध्यापन हेतु बच्चो के माता पिता को उनके विकास की स्थिति और उपलब्धि के बारे में जानकारी देने हेतु।
12. शिक्षण अधिगम सामग्री के चयन मे।
13. नयी कक्षा की व्यवस्था बनाने में।
14. अधिगम गतिविधियो को कैसे लागू कि जाय यह जानने हेतु।
15. बच्चो कि व्यक्तिगत आवश्यक्ताओं को जानने में।
16. परिस्थितियो के सन्दर्भ मे।
17. अधिगम प्रगति के आंकलन के संदर्भ में।
18. शिक्षण विधियो में सुधार हेतु।
19. गुणवतापूर्वक अधिगम प्रदान करने हेतु।
20. कक्षा वातावरण को और आनंददायक बनाने हेतु।

## छात्र–केन्द्रित आंकलन के मौलिक तत्त्व

1. आंकलन के मापन का चयन का विकास इसके अंतर्गत एक अध्यापक अपने छात्रो के आकडो का चयन और उसके मापन की प्रवृत्ति को शामिल करते हैं की ये उपयुक्त है की नहीं. इसके अंतर्गत योजना, पेपर वर्क्स प्रदर्शनी जीवन वृत्त इत्यादी शामिल होते हैं इसमें कभी कभी विद्यार्थिओं से ही पूछताछ की प्रक्रिया कर ये जानने का प्रयास किया जाता हैं कि उनका स्वपरिणाम कितना आया हैं।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

2. वाद विवाद और आकलन का परिणाम के अंतर्गत परिणाम के आधार पर यह विचार विमर्श किया जाता हैं व्यक्तिगत रूप से कितना व्यक्ति का विकास व्यक्तिगत रूप से हो सकता हैं।
3. अधिगम परिणामो के विवरण का सूत्रीकरण: इसमें वे तथ्य आते हैं जो बताते हैं की छात्र को क्या जानना चाहिये।
4. परिणामो हेतु अनुभवी नेतृत्व का निर्माण के सन्दर्भ में इसके अंतर्गत वे सभी अनुभव शामिल हैं जो उससे वातावरण तथा दोनों अनुभव से प्राप्त होते हैं।

## आंकलन का व्यवहारवादी उपागम

आंकलन के व्यवहारवादी उपागम के अंतर्गत एक शिक्षक कक्षागत परिस्थितियों मे अधिगमकर्ता के व्यवहार का निरीक्षण कर्ता है और निरीक्षण के त्दोपरांत उस व्यवहार को विश्लेषित भी करता है। इसमे प्रेक्षणकर्ता इस निश्कर्षों पर पहुचने का प्रयास करता है कि किसी खास व्यवहार के उदीप्त होने के कारण क्या दृ क्या है और उसका परिणाम क्या होगा। व्यवहारवादी आंकलन मे हम यह भी प्रेक्षण करते है कि अधिगमकर्ता अथवा सीखनेवाला किस तरह से अपने पर्यावरण के तत्वो को नियंत्रित करता है और किस प्रकार अपने अंतरू संबन्धो को बनाए रखने मे समर्थ हो जाता है।

## व्यवहारवादी आंकलन दो तरह के होता है

### क्रियात्मक आंकलन

इसमे इस संदर्भों का पता लगाते है कि या लगाने प्रयास करते है कि अधिगमकर्ता के व्यवहार को नियंत्रित करने व्यवहार मे सुधार करने तथा उसके बनाये रखने मे कौन दृ कौन से कारण प्रभावी है प्रभावी रूप से अपनी भूमिका निभा सकते है।

## वातावरणीय वयवहार का आंकलन

इस प्रकार के आंकलन मे हम इस बात का पता लगाते है कि (पहचानने का प्रयास करते है कि) बच्चे का अपने वातावरण के साथ किस प्रकार का अंतरू सम्बंध है। अधिगम के व्यवहारवादी आंकलन के अंतर्गत ही समवयस्क समूह आंकलन भी आता है।

## आकलन का संज्ञानवादी उपागम

व्यक्ति या बालक के व्यक्तित्व में इतनी विलक्षणता होती है कि सिर्फ व्यवहार के आवलोकन से ही उसके बारे मे सही दृसही आंकलन करना संभव नहीं हो पाता है। संज्ञानात्मक उपागम एक तरह कि तकनीकी है जिसकी सहायता से व्यक्ति के मस्तिष्क की विभिन्न योग्यताओं जैसे तर्कशक्ति, चिन्तनशक्ति, समस्या समाधान क्षमता आदि के द्वारा ज्ञान भाषावी कौशल, संज्ञानात्मक समताए एवं संज्ञानात्मक निर्योग्यात्मक आदि के बारे मे भी अनुमान लगाते है। इस आकलन के द्वारा प्राप्तांकों या प्रदर्शनो के माध्यम से हम अधिगमकर्ता के उपलब्धिओ को जानते है।

संज्ञानात्मक क्षमताओ को बढ़ाने का प्रयास भी किया जाता है। संज्ञानात्मक योग्यताए भी किसी न किसी व्यवहार के रूप मे प्रगट होती है अतरू किसी भी व्यक्ति का मूल्यांकन करने से पूर्व उसके संज्ञानात्मक वयवहार को आंकना नितांत ही आवश्यक है। इस तरह के वयवहार को आँकने के लिए स्मृति पर आधारित क्रियाकलाप जैस–पुनः स्मरण, प्रत्यावर्तन, विश्लेषण आदि पर आधारित परीक्षणों का प्रयोग करते है। संज्ञानात्मक अधिगम के सिद्धांतो मे पियाजे, ब्रूनर, बायोगासकी, इरिक्सन आदि का प्रमुख योगदान है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

## आकलन का संरचनावादी उपागम

आकलन का संरचनावादी उपागम संरचनावादी सिद्धांतों पर आधारित होता है। ये सिद्धांत इस बात पे बल देते है कि अधिगमकर्ता किसी भी वस्तु या परिस्थिति या व्यवस्थाओ के बारे मे अपने मस्तिस्क मे एक संज्ञानात्मक मानचित्र निर्मित करता है जिसे हम संरचना कहते है। जैसे–जैसे अधिगमकर्ता को उस परिस्थिति या वस्तु के बारे मे नवीन जांकारियाँ मिलती है, पूर्व निर्मित संरचनाओ मे परिवर्तन होता रहता है। अतरू संरचनावादी आकलन के अंतर्गत इन परिवर्तनों के बारे मे अनुमान लगाया जाता है। यह आकलन इस बात पर बल देता है कि व्यक्ति कोई भी नवीन ज्ञान मस्तिष्क मे पूर्व निर्मित संरचनाओ से जोड़कर ही सीखता है अथार्त पूर्व ज्ञान नए ज्ञान को सीखने का एक प्रभावी कारक है। अतः संरचनावादी आकलन के अंतर्गत बालक के उन व्यवहारों का पता लगाया जाता है जो वह पहले से सीखा हुआ जिसकी सहायता से अधिगम के अंतरण को और प्रभावी बनाया जा सके। संरचनावादी आकलन के अंतर्गत कम कसा शिक्षण मे लोकतांत्रिक व्यवस्था, छात्र केंद्रित उपागम, स्वायपत्ता, जिम्मेवारी आदि बनाने व प्रदान करने का प्रयास करते है जिससे बालक की संरचनावादी क्षमताओं मे वृद्धि हो सके। प्रोजेक्ट कार्य क्षेत्र भ्रमण, प्रयोग श्रर्वय–दृश्य सामाग्री आदि के माध्यम से आधिगमकर्ता के संरचनाओ को परिवर्तित एवं सुधार करने का प्रयास किया जाता है। संरचनावादी उपागम के अंतर्गत पूर्ण से खंड की ओर ज्ञात से अज्ञात की ओर, किसी वस्तु का जोड़ तृतोड़ करना आदि सूत्रो एवं कार्य को संपादित किया जाता है।

## वास्तविक योगयता व प्रेक्षणीय योग्यता मे अन्तर

किसी भी बालक/अधिगमकर्ता के व्यक्तित्व या व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षो का एकदम सटीक प्रेक्षण करना या उसके व्यवहार के बारे मे अनुमान लगाना या आकलन करना अत्यंत ही कठिन कार्य है। कक्षा शिक्षण मे अधिगमकर्ता के आकलन के लिए कई विधिया प्रयोग मे लायी जाती है जिसका उद्देश्य उनके योग्यताओ का सही सही आकलन करना होता है। अधिगमकर्ता के सीखने की विधियो, व्यवहारों एवं उसके निष्पादन पर कई चरो का प्रभाव पड़ता है। ये चार निंन्न है–

- निराक्षित चर
- आश्रित चर
- परिनियामक चर
- मध्यवर्तीय चर
- वाहव्य चर/नियतित चर

इसमे से कुछ चर ऐसे है जो आकलन कों प्रभावित तो करते है लेकिन इन चरो पर किसी भी प्रकार का नियंत्रण संभव नहीं है। आयु, लिंग, जाति, पारिवारिक, पृष्ठभूमि, सांस्कृति पृष्ठभूमि जो पहले से ही नियत है, (परिनियामक चर) ये चर प्रेक्षणीय व्यवहार को प्रभावित करते है इन चरो पर प्रेक्षणकर्ता का कोई नियंत्रण नहीं होता।

इसी प्रकार मध्यवर्ती चरो जैसे थकान, चिंता अभिप्रेरणा वा स्तर जिन्हे देखा तो नहीं जा सकता पर व्यक्ति के प्रेक्षणीय व्यवहार को परोक्ष/ अपरोक्ष रूप से प्रभावित करते है इसके बारे केवल अनुमान लगाया जा सकता है।

वाहव्य चरो पर एक ही हद तक नियंत्रण किया जा सकता है। प्रेक्षणीय व्यवहार एवं वास्तविक मे अन्तर उपरोक्त चरो के प्रभाव के कारण भी पाया जाता है। अवलोकन एवं मूल्यांकन के सीमित तरीको अवैज्ञानिक विधिया एवं व्यवस्थाओ का भी प्रेक्षिणीय व्यवहार पर प्रभाव पाया जाता है जो वास्तविक व्यवहार से भिन्नता का एक प्रमुख कारक है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

## आकलन के प्रकार

1. पूर्व आकलन योगात्मक एवं निदानात्मक।
2. व्यक्तिनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ।
3. तुलना के आधार पर।
4. औपचारिक व अनौपचारिकत।
5. आंतरिक एवं वाहा।

## पूर्व आकलन

किसी भी कक्षा में प्रवेश या उस कक्षा मे शिक्षण अधिगम योजना बनाते समय बालक क पूर्व आकलन किया जाता है। पूर्व आकलन मे प्रवेश आदि आती हैं।

## संरचनात्मक आकलन

इसका संबंध शैक्षिक कार्यक्रम शिक्षाविद पाठ्यवस्तु शिक्षण विधि आदि से है। संरचनात्मक मूल्यांकन के अंतर्गत शिक्षण अपने, शैक्षिक अपने शिक्षण कार्यक्रम शिक्षण विधि से आदि की गुणवता, प्रभावकारिता तथा उपयोगिता व आकलन करता है जिससे उसे और परिमार्जित किया जा सके। मूल्यांकन का संरचनात्मक व योगात्मक रूप से वर्गीकरण मिचौल स्क्रिवेन ने 1967 मे मूल्ययांकन की भूमिका का उल्लेख करते समय किया। इसी को आधार मानकर स्क्रिवेन ने संरचनात्मक आंकलन को स्पष्ट किया। संरचनात्मक आंकलन को वास्तव मे सीखने के लिए आकलन कहा जाता है। इस प्रकार के आकलन का मुख्य प्रायोजन छात्रों को वह रचनात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त करने मे सक्षम बनाता है जो उन्हे बेहतर सीखने और प्रभावी प्रगति करने मे उनकी मदद करेगी। एसी प्रतिक्रिया आम तौर पर (लेकिन हमेशा नहीं) शिक्षको द्वारा दी जाती है। और छात्रों को आगे चलते जाने और सीखने की पहचान कर सकता है।––

1. छात्र क्या कर सकता है और क्या नहीं?
2. छात्रों को क्या कठिन लगता है?
3. किसी भी अंतर और छात्रों को हो सकने वाली गलत फहमियाँ संरचनात्मक आंकलन मे निम्न बिन्दु शामील होता है।
   - सीखने के स्पष्ट लक्ष्यो की चर्चा करते, छात्र के संवाद
   - छात्र का अपने लक्ष्य की प्रगति के लिए सक्रिय होना।
   - स्वत: और समकालीन समीक्षा सहित प्रगति की निगरानी।

सामयिक और उपयोगी प्रतिक्रिया का हिस्सा है क्योकि सरचनात्मक छात्र को सुधरने मे छात्रों की मदद करता है।यह भी महत्वपूर्ण है कि छात्र और शिक्षक दोनों अपने लक्ष्यो को प्राप्त करने के लिए दृढ़ रहे जब तक कि छात्र अपने लक्ष्य को प्राप्त कर ण ले।जिसके लिए शिक्षक को छात्र कि जरूरतो को पूरा करने के लिए अपने अध्यापन मे समायोजन करना भी पड़ सकता है।

## संरचनात्मक आंकलन कि विशेषताए

1. यह निदानात्मक और सुधारात्मक है।
2. यह प्रभावशाली प्रतिक्रिया के लिए प्रावधान करता है।
3. यह छात्रों के स्वम सीखने मे उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए मंच तैयार करता है।
4. वह शिक्षको को आकलन के नतीजो को ध्यान मे रखते हुए अध्यापन को समायोजित करने मे सक्षम बनाता है।
5. यह उस अगाध प्रभाव की पहचान कराता है जो आंकलन छात्रो की प्रेरणा और आत्म–सम्मान, जिनके सीखने की प्रक्रिया पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है, पर डालता है।
6. यह छात्रों को स्वम का आकलन करने और सुधार करने के तरीको को समझने मे स्क्षम होने की जरूरत की पहचान कराता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

7. जो कुछ भी पढ़ाया जाता है उसकी परिकल्पना नीव को विकसित होता है।
8. कैसे और क्या पढ़ाया जाए यह तय करने के लिए सीखने के विभिन्न साहिल्लियों को समाविष्ट करता है।
9. छात्रों को वे माप दृदण्ड समझने को प्रोत्साहित करता है जिनका उपयोग उनके काम को परखने के लिए किया जाएगा।
10. छात्रों को प्रतिक्रिया के बाद उनके काम को सुधारने का अवसर प्रदान करता है।

## योगात्मक आकलन

योगात्मक आकलन मे किसी शैक्षिक कार्यक्रम, योजना या सामाग्री के गुण एवं दोषो की जानकारी इसलिए एकत्रित करता है कि उस कार्यक्रम, योजना या सामाग्री को स्वीकार करने या भविष्य मे जारी रखने के संदर्भ मे निर्णय लिया जा सके। योगात्मक आकलन को "सीखने का आकलन" के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार के आकलन का प्रयोजन शिक्षक को छात्रों की उपलब्धि और कार्य प्रदर्शन की पहचान करने मे सक्ष्म करना है; जिसमे सीखने की अवधि एक सत्र या वर्ष हो सकती है। योगात्मक आंकलन का उपयोग आम तौर पर एक छात्र की अन्य छात्रों की समक्ष तुलना करने के लिए किया जाता है। जब विद्यार्थी किसी परीक्षा को पास कर लेते है तो अन्त मे योगात्मक विधि द्वारा उनका आकलन किया जाता है। इससे छात्रों को सामान्य स्तर का बोध कराया जाता है तथा छात्रो को सफलता के आधार शिक्षण की प्रभावशीलता का आंकलन होता है। इससे अध्यापन तथा अनुदेशन को प्रबलन मिलता है। इससे आगे के शिक्षण का नियोजन तथा व्यवस्था मे सहायता मिलती है। विद्यार्थी की सफलता के आधार पर ही उद्देश्यों की प्राप्ति का निर्णय लिया जाता है। अत: किसी शैक्षिक कार्यक्रम को अंतिमरूप देने एवं उसे चालू कर देने के पश्चात् उसकी समग्र वांछनीय को ज्ञात करने के लिए किया गया आकलन का उद्देश्य यह जानना कि क्या उस योजना के आंकलन का उद्देश्य यह जानना कि उस योजना को चालू रखा जाए या नहीं। स्पष्ट करना होता है अथार्त पहले से चल रही है योजनाओ को जारी रखा जाए या नहीं का निर्णय लेने से होते है। और इसके अतिरिक्त अनेक वैकल्पिक कार्य मे से किसको जारी रखा जाए और किसको छोड़ दिया जाए इसकी पूरी तरह से आंकलन किया जाता है। जैसे यदि एक अध्यापक को अपनी छात्रों को किस विषय के लिए पुस्तक बतानी है और उस विषय पर उपलब्ध अनेक पुस्तकों मे से आंकलन कर उसके विषय मूल्यांकन द्वारा कोई एक पुस्तक बताता है तो शिक्षक का यह आंकलन योगात्मक आंकलन कहलाता है।

## अधिगम के लिए आकलन (Assessment for Learning)

1. इसका प्रारम्भ औपचारिक शिक्षा की रूप रेखा निर्माण करते समय होता है।
2. अधिगम के लिए आकलन से हमारा आशय के ज्ञानात्मक तथा अन्य पहलुओ की जानकारी के अभाव में पाठ्यक्रम का निर्माण करना तथा उनके सरम एवं सहज माध्यम से ज्ञान प्रदान करना है।
3. इसमे छात्रो को सामाजिक नियम रीति रिवाज आदि का ज्ञान सैधान्तिक रूप मे प्रदान किया जाता है।
4. प्रमुख उद्देश्य छात्रों के अधिगम प्रक्रिया को समायोजित करना होता है।
5. आंकलन का प्राथमिक कार्य छात्रों को पृस्ठपोषण प्रदान करना तथा अनेक अधिगम का समर्थन करना है। इसके लिए शिक्षण निम्न भारार्क ग्रेड या विभिन्न गतिविधियो मे प्राप्त ग्रेड का प्रयोग करता है।
6. इसका आकलन कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता है।इसके लिए व्यक्ति को साक्षर

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

होना जरूरी है। तथा ज्ञानी व अन्वेषी प्रवृति का होना आवश्यक है।
7. यह छात्रों को सैद्धांतिक ज्ञान को महत्व न देकर जो जो सभी के हिट मे हो उन शिक्षण विधियो का।
8. इसमे छात्रो के सैद्धांतिक पक्ष पर ध्यान दिया जाता है। यदापि अब दोनों मे सामंजस्य पर ध्यान दिया जाने लगा है।

## अधिगम का आकलन (Assessment of Learning)

1. इसका प्रारम्भ छात्र के औपचारिक शिक्षा के ग्रहण करने के साथ हो जाता तथा ये प्रक्रिया जीवन प्रयंट चलती रद है।
2. आधिगम का आंकलन से तात्पर्य छात्र द्वारा प्राप्त वास्तविक समुह या समुदाय तथा समाज आदि स्थानो से सीखता है।
3. इसके अंतर्गत छात्रों को सामाजिक परम्पराओ का व्यावहारिक ज्ञान पाठ्येचर गतिविधि के माध्यम को स्वतरूही प्राप्त होती है।
4. इसके अंतर्गत प्रमुख उद्देश्य छात्रों की उपलब्धियों को प्रमाणित करना या ग्रेड प्रदान करना होता है।
5. प्राथमिक कार्य छात्रो को ग्रेड प्रमाण प्रदान करना है तथा इसमे पृस्ठपोषण एक घटक के रूप मे किया जाता है।
6. इसका आकलन कोई भी कर सकता है। अर्थात इसमे साक्षर या निरक्षर का कोई भेद नहीं है।
7. यह छात्रों को सैद्धांतिक ज्ञान का उपयोग व्यावहारिक जीवन मे कैसे करना है इसकी शिक्षण।
8. इसमे सैद्धांतिक का उपयोग व्यावहारिक जीवन मे कैसे करना है, इसकी शिक्षा प्रदान करता है।
9. समाजीक गतिविधिया मे भाग लेने समस्याओ का समाधान करने आदि का पता चलता है।

## निदानात्मक आकलन

यह आकलन अधिगम प्रक्रिया मे आने वाली समस्त कठिनाइयों से संबधित है। निदानात्मक आकलन मे प्रेक्षणकर्ता, अधिगमकर्ता कि समस्याओ का आकलन करता है जो कि उसकी शैक्षिक उप्लब्धियों मे बाधा पहुँचाती है या अप्रभावी उपलब्धियों के एक कारक किए रूप मे उपस्थित हैं।

## वस्तुनिष्ठ आकलन

वस्तुनिष्ठ आकलन वैज्ञानिक तौर से किया जाता है जबकि व्यक्तिनिष्ठ आकलन मे आत्म तात्व होता हैं।

## औपचारिक एवं अनौपचारिक आकलन

औपचारिक रूप रो जो आकलन किया जाता है उसकी प्रकृति प्रायः लिखित रूप की जाती है। जैसे दृजमेज, गुप्र, प्रश्नपत्र, इत्यादि के प्राप्तांकों के आधार पर। अनौपचारिकता आंकलन का न तो निश्चित समय होता है न ही निश्चिता विधि।

## आन्तरिक एवं वाध्य आकलन

आन्तरिक गूल्यांकन स्कूल संस्था या शिक्षक या समवयस्क समूह आदि द्वारा किया जाता है जबकि वाध्य आकलन किसी GOVERNING BODY (प्रषाशनिक तंत्र) द्वारा किया जाता है जिसे विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किया जाता है। जैसे विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित बी०एड की मुख्य परीक्षा।

## गुणात्मक एवं मात्रात्मक आकड़ों की प्रकृति

1. हमें वे सूचनाए प्राप्त होती है जिसे किसी व्यक्ति अपने अन्तर्मन मे छुपाए रखता है।
2. इस प्रकार का आकडा हमे गहनतापूर्वक किसी भी व्याकती के समझ, संरचनाओ एवं दृष्टिकोण की जानकारी देता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

3. इस प्रकार के आकड़े मे क्रमिक रूप से उसके सम्पूर्ण क्रिया कलापों की सूचनाए मिलती है।
4. हमे कुछ ऐसी मौखिक सूचनाए प्राप्त होती है जो लिखित रूप से संभव नहीं है।
5. इस प्रकार के आकड़े से हमे कुछ ऐसी सूचनाए प्राप्त होती है जो प्रश्नावली एवं अन्य विधियो से प्राप्त नहीं हो पाता है।
6. मात्रात्मक आकड़े मे अपेक्षाकृत बड़े समूह से सूचनाए प्राप्त होती है

## अधिगम के आकलन के विमा या अनुशता

शिक्षा के अंतिम लक्ष्य बालक के व्यवहार मे परिवर्तन लाना होता है। बालक के व्यवहार व्यक्तित्व के पक्षो से संबधित होते है। इसके अंतर्गत बाध्य तथा आंतरिक दोनों प्रकार के व्यवहार आते है।

विद्यालय मे पढ़ाये जाने वाले सभी विषय बालक के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्षो का विकास करते है। अधिगम को इन्हीं तीनों अनिक्षेत्रों मे बाँटा जाता है। अधिगम के ये तीनों पक्ष बाध्य तथा आंतरिक दोनों रूपों मे पाये जाते है।

### ज्ञानात्मक पक्ष

नई सूचनाओ तथ्यो, घटनाओ, प्रक्रियाओ एवं सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त करना हमारे व्यवहार के ज्ञानात्मक पक्ष से संबधित है। शिक्षण के ज्ञानपूरक उद्देश्यों मे इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि छात्र नवीन सूचनाओ, तथ्यो मे उद्देश्यों को ज्ञान, बोध, प्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन कुल छरू श्रेणीयो मे विभक्त किया। ये छरू उपभाग मिलकर किसी शैक्षिक क्रिया को स्वचालित बनाते हैं।

1. ज्ञानदृ वलूम एवं उनके साथियो ने ज्ञान को स्मृति स्तर तक सीमित रखा है। इसमे प्रत्यास्मरण व पहचान कि क्रिया होती है।
2. बोध–छात्र किसी तथ्य, नियम, सिद्धांत आदि के अर्थ को ग्रहण करता है।
3. प्रयोग–ज्ञान व बोध का नवीन पारिस्थतियों मे प्रयोग करता है।
4. विश्लेषण–पाठयवस्तु को उसके अंतर्निहित भागो व अंगो मे विभाजित करता है और मध्य संबद्ध स्थापित करता है।
5. विश्लेषण–विभिन्न तथ्यो को नए रूप से संगठित करता है। अमूर्त संबंध खोजता है।
6. मूल्यांकन–इसमे किसी विचार वस्तु, घटना, नियम, सिद्धांत आदि के संबंध मे मात्रात्मक एवं गुणात्मक निर्णय लिए जाते है।

### भावात्मक पक्ष

1. आग्रहण–इस स्तर पर छात्र उस क्रिया के लिए सवेदनशील होता है जो उसे सिखायी जाती है।
2. अनुक्रिया–प्रथम स्तर पर ग्रहण की गयी क्रिया के प्रति सक्रिय प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति होती है।
3. मूल्यन–इस स्तर पर छात्र किसी वस्तु तथ्य घटना, नियम अथवा व्यवहार की श्रेष्ठता, गुणो के बारे मे स्वयं ही भाव प्रगत करता है।
4. विचारण–उपर्युक्त निर्मित मूल्यो मे समता, भिन्नता एवं संबंध स्थापित कर धारणाओ का निर्माण करता है।
5. विस्थापन–इस स्तर पर उपर्युक्त चयनित मूल्यो के के आधार पर निर्मित विचारो या धारणाओ को क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित किया जाता है।
6. विशिष्टीकरण–इस स्तर पर छात्र उपर्युक्त निर्मित मूल्यो के अनुसार स्वयं के व्यवहार को संचालित करता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

## क्रियात्मक पक्ष

**प्रत्यक्षीकरण–** इस स्तर पर छात्र किसी वस्तुक्रिया विचार घटना, नियम अथवा सिद्धांत का प्रत्यक्षीकरण करता है।

**व्यवस्था–** कोई क्रिया करने से पूर्व शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक रूप से अपने आपको समायोजित करता है।

**निर्देशात्मक अनुक्रिया–** छात्र किसी जटिल कौशल को करने के लिए किसी बाध्य मार्गदर्शन के निर्देशन मे कार्य करता है।

**कार्य प्रणाली–** आत्म दृविश्वास विकसित कर लेता और आंशिक रूप से कौशल का भी प्रदर्शन करता है।

**जटिल प्रत्यक्ष अनुक्रिया–** इस स्तर पर पहुचने पर छात्र किसी भी क्रिया अथवा व्यवहार को शीघ्रता, सुगमता एवं स्वाभाविक ढंग से सरलतापूर्वक करता है।

## आत्म आकलन

जब आप एक कैरियर चुनने की कोशिश कर रहे हैं, तो दो बातें आपको करना चाहिए जो आपको बेहतर और अच्छी तरह से सूचित निर्णय लेने में मदद करें। सबसे पहले, आपको अपने बारे में सीखना होगा इसके बाद, आपको उन कॅरिअर का पता लगाना होगा जो आपके द्वारा सीखी गई बातों के आधार पर एक अच्छा फिट हो सकता है। ये चरण एक और दो कैरियर योजना प्रक्रिया है अगर आप ऑनलाइन जाते हैं, तो आप किसी भी कैरियर के बारे में जानकारी का धन प्राप्त करने में सक्षम होंगे जो दिमाग में आता है, लेकिन अपने बारे में सीखने से बहुत अधिक प्रयास आएगा आपको वह करना होगा जिसे स्व मूल्यांकन के रूप में जाना जाता है।

## स्व मूल्यांकन क्या है?

क्या यह किसी तरह का परीक्षण है? आत्म मूल्यांकन एक परीक्षण नहीं है इसका एक वांछित परिणाम नहीं है, उदाहरण के लिए, सही या गलत जवाब जो एक विषय के स्वामित्व को प्रदर्शित करेंगे। यह डेटा इकट्ठा करके अपने बारे में जानने का एक तरीका है जिसमें आपके काम से संबंधित मूल्यों, रुचियों, व्यक्तित्व प्रकार और योग्यता के बारे में जानकारी शामिल है। आपका लक्ष्य उन व्यवसायों को ढूंढना होगा जो परिणामों के आधार पर उपयुक्त हैं। बेशक, ऐसे अन्य कारक हैं जिन्हें अंतिम निर्णय लेने पर आपको तौलना होगा, लेकिन यह प्रक्रिया के अगले चरण के दौरान–कैरियर अन्वेषण होगा।

आप एक औपचारिक स्व मूल्यांकन क्यों करना चाहिए? आप अपने बारे में कितना जानते हैं? यदि आप अधिकतर लोगों की तरह हैं, तो इससे पहले कि आप इसका उत्तर दे सकें, आपको शायद इस प्रश्न के बारे में बहुत कुछ सोचना होगा। आपको पता होगा कि आपके शौक क्या हैं और आप लोग (या नहीं) लोग हैं शायद आप आसानी से समझा नहीं सके, आपके लिए कौन–सा काम–संबंधित मूल्य महत्वपूर्ण हैं, और जब आप कुछ चीजें जानते हैं जो आप अच्छे हैं, तो आपके पास अपनी सभी योग्यताओं की पूरी सूची नहीं हो सकती है। यहां तक कि अगर आप अपनी विशेषताओं में से हर एक का एक स्थान प्रदान कर सकते हैं, तो एक अच्छा मौका है, आपको नहीं पता कि उस जानकारी का उपयोग कैसे किया जाए जिससे आपको अपना कैरियर ढूंढने में मदद मिलेगी जो एक अच्छी फिट है।

## स्व मूल्यांकन का एनाटॉमी

प्रभावी होने के लिए आत्म मूल्यांकन, किसी व्यक्ति के कार्य संबंधी मूल्यों, रुचियों, व्यक्तित्व प्रकार और योग्यता को ध्यान में रखना चाहिए। इन सभी विशेषताओं को आप कौन बनाते हैं, इसलिए उनमें से किसी को नजरअंदाज करने से आपको सही जवाब

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

नहीं मिलेगा। चलो हर एक पर एक नज़र डालें इस डेटा को इकट्ठा करने के लिए उपलब्ध उपकरणों के बारे में अधिक जानने के लिए स्वयं आकलन उपकरण का उपयोग कैसे करें पढ़ें।

## कार्य–संबंधित मान

आपके मूल्य उस विचार और विश्वास हैं जो आपके लिए महत्वपूर्ण हैं। आपके काम से संबंधित मूल्यों में स्वायत्तता, प्रतिष्ठा, सुरक्षा, पारस्परिक संबंध, दूसरों की मदद, लचीला काम अनुसूची, बाहरी कार्य, अवकाश के समय और उच्च वेतन शामिल हो सकते हैं।यदि आप करियर चुनते समय इन चीजों को ध्यान में रखते हैं, तो आपके पास नौकरी की संतुष्टि को प्राप्त करने का एक बेहतर मौका ळें।

## रुचियां

विभिन्न गतिविधियों के बारे में आपकी पसन्द और नापसंद आपकी रूचियां बनाते हैं ई.के. मजबूत और अन्य मनोवैज्ञानिकों ने कई साल पहले खोज की थी कि समान हितों को साझा करने वाले लोग एक ही प्रकार के काम का आनंद उठाते हैं। इस सिद्धांत के आधार पर उन्होंने विकसित किया है जिसे अब सशक्त ब्याज इन्वेंटरी कहा जाता है, एक आकलन कई कैरियर विकास विशेषज्ञ अपने करियर की योजना के साथ अपने ग्राहकों की सहायता के लिए उपयोग करते हैं। हितों के उदाहरणों में पढ़ने, चलना, गोल्फ और बुनाई शामिल है।

## आकलन विकास प्रक्रिया के दौरान मूल्यवान इनपुट प्रदान करने वाले शिक्षक

कक्षाओं में जहां सीखने के लिए मूल्यांकन किया जाता है, छात्रों को उनके सीखने और संबद्ध मूल्यांकन में अधिक सक्रिय होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। सीखने के लिए मूल्यांकन का अंतिम उद्देश्य स्व–विनियमित शिक्षार्थियों को बनाना है जो स्कूल को अपने जीवन भर सीखना जारी रखने के लिए सक्षम और आत्मविश्वास छोड़ सकते हैं। शिक्षकों को अध्ययन की एक इकाई के प्रारंभ में जानने की जरूरत है जहां उनके छात्र अपने सीखने के मामले में हैं और फिर लगातार जांच करें कि वे अपने शिक्षार्थियों से प्राप्त फीडबैक को मजबूत करने के माध्यम से कैसे प्रगति कर रहे हैं। छात्रों को जानने की अपेक्षा की जाती है कि वे क्या सीखते हैं और गुणवत्ता के काम किस तरह दिखते हैं। शिक्षक छात्र के साथ काम करने के लिए किसी भी अंतर या गलतफहमी (प्रारंभिक / नैदानिक मूल्यांकन) की पहचान करेगा। जैसे–जैसे यूनिट बढ़ता है, शिक्षक और छात्र छात्र के ज्ञान का आकलन करने के लिए मिलकर काम करते हैं, इस ज्ञान को सुधारने और बढ़ाने के लिए उन्हें क्या जरूरत है, और छात्र उस बिंदु (प्रत्याशी मूल्यांकन) को कैसे बेहतर कर सकते हैं। सीखने की प्रक्रिया के सभी चरणों में मूल्यांकन के लिए आकलन होता हैं।

## ऐतिहासिक विचारो से

पिछले दशकों में, शिक्षक अध्ययन की एक इकाई तैयार करेंगे, जिसमें आमतौर पर उद्देश्यों, शिक्षण रणनीतियों और संसाधन शामिल होंगे। इस परीक्षा या परीक्षा में छात्र का निशान विषय के बारे में उनकी समझ के संकेतक के रूप में लिया गया था। 1998 में, ब्लैक एंड विलीम ने एक समीक्षा प्रकाशित की जिसमें हाइलाइट किया गया कि जो छात्र एक प्रारंभिक तरीके से सीखते हैं वे सामान्य शिक्षण प्राप्त करने वाले मिलान वाले नियंत्रण समूहों से काफी बेहतर हासिल करते हैं। किंग्स–मेडवे–ऑक्सफोर्डशायर फॉर्मेटिव एसेसमेंट प्रोजेक्ट (केएमओएफएपी) सहित किंग्स कॉलेज की टीम द्वारा सीखने के लिए आकलन के लिए कई महत्त्वपूर्ण शोध परियोजनाओं में उनका मूल्यांकन किया

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

गया, मूल्यांकन (स्कॉटलैंड), जर्सी–एक्शन–फॉरमेटिव आकलन (चौनल द्वीप) के लिए आकलन है और इंग्लैंड, वेल्स, पेरू और संयुक्त राज्य अमेरिका में छोटी परियोजनाएं हैं।

## जटिल आकलन

एक जटिल आकलन एक है जिसे एक रूब्रिक और एक विशेषज्ञ परीक्षक की आवश्यकता होती है। जटिल मूल्यांकन के लिए उदाहरण वस्तुओं में थीसिस, वित्तपोषण प्रस्ताव, इत्यादि शामिल हैं। आकलन की जटिलता प्रारूप असंतुलन के कारण है। अतीत में यह अंतिम वर्षीय परियोजना (एफवाईपी) थीसिस मूल्यांकन के लिए अस्पष्ट मूल्यांकन मानदंडों से निपटने के लिए परेशान हो रहा है। वेबस्टर, काली मिर्च और जेनकींस ने एफआईवीपी थीसिस के लिए कुछ सामान्य सामान्य मानदंडों और उपयोग, अर्थ और आवेदन के बारे में उनकी अस्पष्टता पर चर्चा की। वूल्फ 2004 एफआईपी मूल्यांकन मानदंड भार पर विशेष रूप से कहा गया हैरू श्विभाग उन मापदंडों पर चुप्पी है जो वे अपने मानदंडों पर लागू होते हैं क्योंकि वे एक श्रेणी में योगदान करने वाले मानदंडों की संख्या पर हैं। शे (2004) ने एक और गंभीर चिंता उठाई जो तर्क दिया कि इंजीनियरिंग और सामाजिक विज्ञान के लिए एफवायपी मूल्यांकन श्एक सामाजिक रूप से परिभाषित व्याख्यात्मक अधिनियमश है, जिसका अर्थ है कि एक मूल्यांकन कार्य के लिए कई अलग–अलग वैकल्पिक व्याख्याएं और ग्रेड संभव हैं। ब्लैक (1975) द्वारा आकलन की कठिनाई पर चर्चा के बाद एफआईवीपी थीसिस मूल्यांकन के साथ समस्याओं को दशकों से अधिक ध्यान दिया गया है।

## परिभाषाएं

आकलन के कई नियम हैं जो मूल्यांकन के किसी भी चर्चा में दिखाई देंगे। इन शब्दों में से कुछ की सामान्य व्याख्याएं नीचे दी गई हैं:

## आकलन एक व्यापक रूप से उद्धृत लेख से सीखने के लिए आकलन की कार्यरत परिभाषा

शब्द आकलन उन सभी गतिविधियों को संदर्भित करता है जो शिक्षकों द्वारा किए गए, और स्वयं के मूल्यांकन में उनके छात्रों द्वारा, जो शिक्षण और सीखने वाली गतिविधियों को संशोधित करने के लिए अभिप्राय के रूप में उपयोग की जाने वाली जानकारी प्रदान करें, जिसमें वे लगे हुए हैं।

## सीखने के लिए आकलन

दो चरणों–प्रारंभिक या नैदानिक मूल्यांकन और प्रारंभिक मूल्यांकन शामिल हैं। मूल्यांकन विभिन्न प्रकार के स्रोतों (जैसे पोर्टफोलियो, कार्य प्रगतिशील, शिक्षक अवलोकन, वार्तालाप) पर आधारित हो सकते हैं। छात्र को मौखिक या लिखित प्रतिक्रिया प्राथमिक रूप से वर्णनात्मक है और शक्तियों पर जोर देती है, चुनौतियों का पता चलता है, और अगले चरणों के लिए अंक देता है जैसे शिक्षक समझते हैं कि वे छात्रों को ट्रैक पर रखने के लिए उनके निर्देश को समायोजित करते हैं कोई ग्रेड या स्कोर नहीं दिया जाता है–रिकॉर्ड रखने मुख्य रूप से वास्तविक और वर्णनात्मक है सीखने की प्रक्रिया के दौरान, अध्ययन के पाठ्यक्रम के प्रारंभिक आकलन के समय के समय में होता हैं।

## सीखने के रूप में आकलन

सीखने के रूप में आकलन के रूप में छात्रों को शिक्षा के लक्ष्यों और प्रदर्शन के लिए मानदंडों के बारे में जागरूक होना शुरू होता हैं। लक्ष्य निर्धारित करना, प्रगति की निगरानी करना, और परिणाम पर प्रतिबिंबित करना शामिल हैं। इसका अर्थ है छात्र स्वामित्व और उसकी सोच को आगे बढ़ाने

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

के लिए जिम्मेदारी (मेटाविज्ञान) सीखने की प्रक्रिया के दौरान होता है।

## सीखने का आकलन

एक संख्या या पत्र ग्रेड (समरेटिव) के साथ साथ मूल्यांकन मानकों के साथ एक छात्र की उपलब्धि की तुलना परिणामों को छात्र और माता–पिता को सूचित किया जा सकता है सीखने की इकाई के अंत में होता है मूल्यांकन एक छात्र के प्रदर्शन के आधार पर किए गए फैसले नैदानिक मूल्यांकन (अब अधिक बार पूर्व–मूल्यांकन के रूप में संदर्भित) निर्धारित करने के लिए मूल्यांकन क्या एक छात्र करता है और एक विषय के बारे में पता नहीं है एक छात्र की सीखने की शैली या वरीयताओं को निर्धारित करने के लिए मूल्यांकन यह निर्धारित करने के लिए उपयोग किया जाता है कि छात्र किसी विशेष विषय या विषयों के समूह से संबंधित किसी विशेष कौशल का एक निश्चित समूह कैसे कर सकता है अध्ययन की एक इकाई की शुरुआत में होता है निर्देश को सूचित करने के लिए प्रयोग किया जाता हैरू सीखने के लिए आकलन के प्रारंभिक चरण को तैयार करता है।

## रचनात्मक आकलन

अध्ययन के एक यूनिट के माध्यम से प्रगति के रूप में सीखने के अंतराल सहित छात्र के ज्ञान और कौशल का निर्धारण करने के लिए मूल्यांकन किया जाता है अनुदेश और मार्गदर्शन सीखने को सूचित करने के लिए प्रयोग किया जाता है अध्ययन की एक इकाई के दौरान होता है सीखने के लिए मूल्यांकन के बाद के चरण को बनाता है।

## सारांशित मूल्यांकन

आकलन जो उस छात्र को समझने के स्तर को निर्धारित करने के लिए अध्ययन की एक इकाई के अंत में किया गया है एक उम्मीद या मानक के खिलाफ एक निशान या ग्रेड शामिल हैं।

## सिद्धांतों

सीखने के लिए मूल्यांकन के सिद्धांतों की सबसे व्यापक सूची में, व्यूसीए (योग्यताएं और पाठ्यक्रम प्राधिकरण) द्वारा लिखी गई हैं। इंग्लैंड के बच्चों, स्कूलों और परिवारों के विभाग द्वारा प्रायोजित प्राधिकरण, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम, मूल्यांकन और परीक्षाओं के लिए जिम्मेदार है। उनका मुख्य लक्ष्य सीखने के लिए मूल्यांकन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर है, जिसमें कक्षा मूल्यांकन के लिए केंद्र के रूप में इस तरह के आकलन को देखा जाना चाहिए, और सभी शिक्षकों को एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक कौशल के रूप में सीखने के लिए मूल्यांकन करना चाहिए। यूके आकलन सुधार समूह (1999) श्सीखने के लिए मूल्यांकन के बड़े 5 सिद्धांत छात्रों को प्रभावी प्रतिक्रिया का प्रावधान अपने स्वयं के सीखने में छात्रों की सक्रिय भागीदारी मूल्यांकन के परिणामों के बारे में जानकारी लेने के लिए शिक्षण समायोजन गहरा प्रभाव आकलन की पहचान विद्यार्थियों के प्रेरणा और आत्म सम्मान पर है।

## अभ्यास में मूल्यांकन

यद्यपि शैक्षिक प्रणाली में कई उद्देश्यों के लिए आकलन वर्तमान में उपयोग किया जाता है, इस रिपोर्ट का एक आधार यह है कि उनकी प्रभावशीलता और उपयोगिता को अंततः उस सीमा तक न्यायित किया जाना चाहिए जिससे वे छात्र सीखने को बढ़ावा देते हैं। आकलन का उद्देश्य यह केवल ऑडिट करने के लिए नहीं बल्कि विद्यार्थियों के प्रदर्शन को शिक्षित और बेहतर बनाने होना चाहिए। इस अंत में, लोगों को हर मूल्यांकन स्थिति से महत्वपूर्ण और उपयोगी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। शिक्षा में, अन्य व्यवसायों में, उचित निर्णय लेने से संबंधित, सटीक और

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

समय पर जानकारी तक पहुंच पर निर्भर करता है। इसके अलावा, प्राप्त जानकारी को पाठ्यक्रम और अनुदेश के बारे में फैसलों को सूचित करने और अंततः छात्र सीखने में सुधार (नेशनल काउंसिल ऑफ टीचर ऑफ मैथमैटिक्स, 1995) द्वारा अच्छा उपयोग किया जाना चाहिए। आकलन अलगाव में काम नहीं करते; सीखने में सुधार के लिए एक मूल्यांकन की प्रभावशीलता पाठ्यक्रम और अनुदेश के संबंध में उसके संबंधों पर निर्भर करती है। आदर्श रूप से, शिक्षा पाठ्यक्रम के संबंध में विश्वसनीय और प्रभावी है, और आकलन ऐसे तरीके से पाठ्यक्रम को प्रतिबिंबित करता है कि यह निर्देश के सर्वोत्तम अभ्यासों को मजबूत करता है। वास्तविकता में, हालांकि, मूल्यांकन, पाठ्यक्रम और शिक्षा के बीच रिश्ते हमेशा आदर्श नहीं होते हैं। अवसर मूल्यांकन न केवल पाठ्यचर्या का एक सबसेट और निर्देश के संबंध में, और अनपेक्षित तरीकों (वलेन, हैमिल्टन, मैककैफ्री, और स्टेशेर, 2000; कोरेज़ और बैरोन, 1998, 2000, राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद एनआरसी, 1992 बी) इस अध्याय में हमने अध्याय 2 में पहचाने जाने वाले विचार पर विस्तार किया है, सिस्टम के तीन हिस्सों में बांटे गए ज्ञान के आधार पर या डोमेन में सीखने के बारे में साझा ज्ञान के आधार पर विकसित होने पर तालमेल सबसे अच्छा प्राप्त किया जा सकता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. पाण्डेय, के.पी, शैक्षिक एवं मूल्यांकन विश्वविदयालय प्रकाशन।
[2]. गुप्ता एस.पी., आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
[3]. अधिगम के लिए आकलन, विपिन अस्थाना, पेज नंबर–443।
[4]. रमन बिहारी लाल दृ अधिगम के लिए आंकलन, पेज नं दृ 26–28।
[5]. एस०पी कुलश्रेष्ठ दृशैक्षिक तकनीकी के मूलाधार, पेज नं–354–55।
[6]. Chalmers, A F (1976) What is this thing called Science?, University of Queensland Press, Queensland, Australia.
[7]. Ferlie, E., Ashburner, L., Fitzgerald, L., and Pettigrew, A. (1996) The New Public Management inAction, Oxford University Press, New York.
[8]. Puckett, M. B., and J. K. Black. 1994. Authentic Assessment of the young child: Celebrating development and learning. New York: Merrill.
[9]. Rowan (1990) Commitment And Control: Alternative Strategies for the Organizational Design of Schools, Review of Research in Education, Vol. 16, pp. 353-389.
[10]. https://en.wikipedia.org/wiki/Assessment_for_learning.
[11]. http://www.ltag.education.tas.gov.au.
[12]. *"Assessment Training Institute"*. www.assessmentinst.com.
[13]. Ho Sung Kim, Quantification for complex Assessment: uncertainty estimation in final year project thesis Assessment, European Journal of Engineering Education, 2013, pp 1-16 https://dx.doi.org/10.1080/03043797.2012.742869.
[14]. Ho Sung Kim, UncertaintyAnalysis for peerAssessment final year project, European Journal of Engineering Education, Vol 39 (1), 2014, pp 68-83 https://dx.doi.org/10.1080/03043797.2013.833171.
[15]. Webster, F., D. Pepper, And A. Jenkins. 2000. "Assessing the undergraduate dissertation." Assessment & Evaluation in Higher Education, 25 (1): 71–80.
[16]. Woolf, H., 2004. "Assessment criteria: reflections on current practices." Assessment and Evaluation in Higher Education, 29 (4): 439–493.

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044